श्री पुष्पदंतनाथ विधान

माण्डला

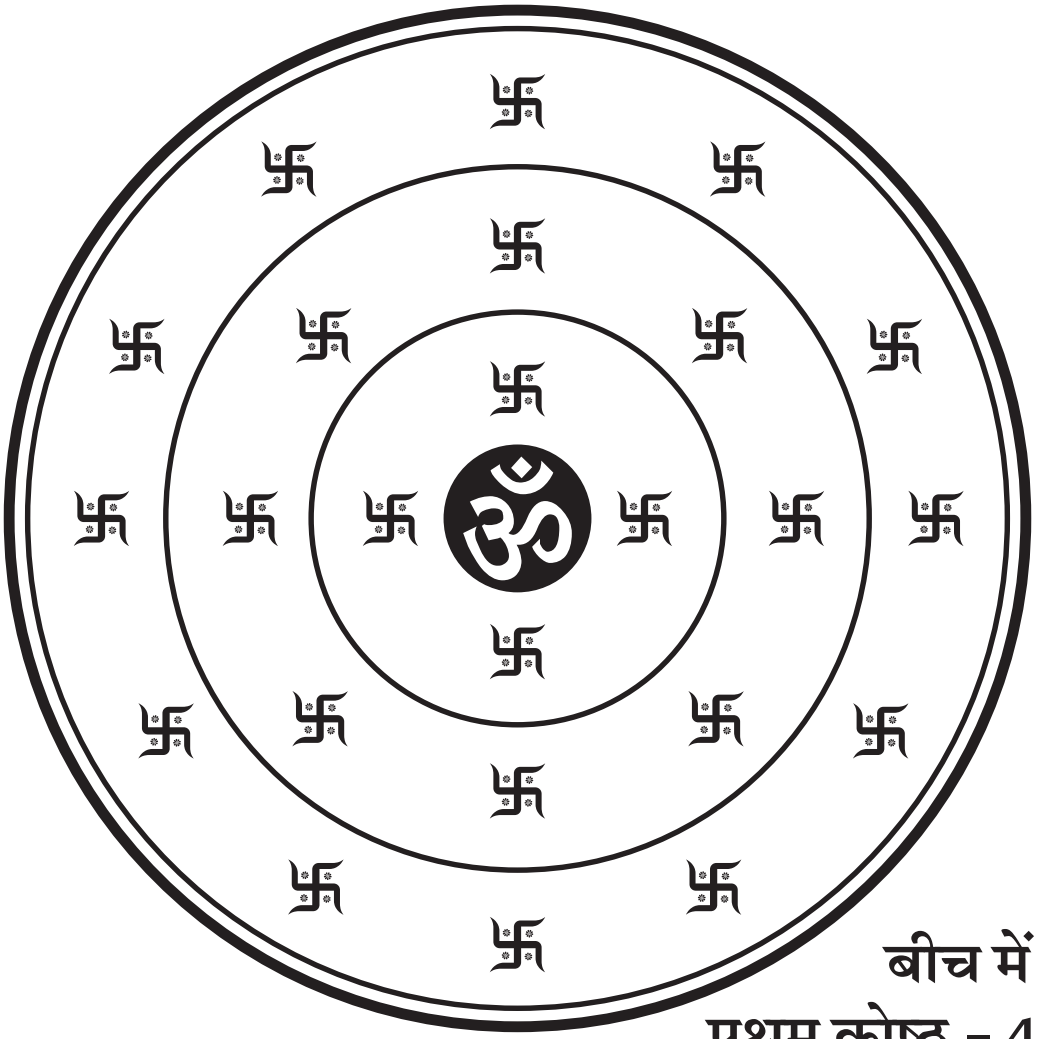

बीच में – ॐ
प्रथम कोष्ठ – 4 अर्घ्य
द्वितीय कोष्ठ – 8 अर्घ्य
तृतीय कोष्ठ – 12 अर्घ्य
कुल – 24 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

कृति : श्री पुष्पदंतनाथ विधान
कृतिकार : प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण : प्रथम 2022, प्रतियाँ : 1000
संकलन : मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोगी : आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी
संपादन : ब्र. ज्योति दीदी – मो.: 9829076085
ब्र. आस्था दीदी – मो.: 9660996425
ब्र. सपना दीदी – मो.: 9829127533
संयोजन : ब्र. आरती दीदी – मो.: 8700876822
प्राप्ति स्थल : 1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017
2. श्री महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर-3 रोहिणी,
मो.: 9810570747
3. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी 09416888879
4. विशद साहित्य केन्द्र, हरीश जैन, दिल्ली
मो.: 09818115971, 09136248971

पुण्यार्जक :

श्री पुष्पदंतनाथ स्तवन

दोहा – सुविधि बताए मोक्ष की, पुष्पदन्त भगवान।
जिनका हम करते यहाँ, भाव सहित गुणगान।।

सोलह कारण भव्य भावना, पूर्व भवों में भाए हैं।
पावन तीर्थंकर प्रकृति शुभ, पुष्पदन्त जी पाए हैं।।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष शुभ, पंचकल्याणक प्रगटाए।
कर्म नाशकर अपने सारे, मोक्ष महापद को पाए।।4।।
मोक्षमार्ग के राही पावन, होकर किए जगत कल्याण।
रत्नत्रय को पाने वाल, पाए आप अलौकिक ज्ञान।।
द्वादश तप को तपने वाले, किए निर्जरा भली प्रकार।
अर्न्तबाह्य परिग्रह त्यागी, होके आप परम अनगार।।1।।
ज्ञान ध्यान तप लीन जिनेश्वर, कर्म घातिश किए विनाश।
ज्ञान दर्शनानन्त वीर्य सुख, का भी प्रभु जी किए प्रकाश।।
समवशरण की रचना करके, इन्द्र किए प्रभु की जयकार।
तीन योग से प्रभु के चरणों, वन्दन कीन्हे बारम्बार।
प्रभु की दिव्य देशना पावन, ॐकारमय रही महान।।
श्रद्धा ज्ञानाचरण प्राप्त कर, मोक्षमार्ग पर करें गमन।
ऐसे शिव दर्शायक प्रभुपद, करते हम सम्यक अर्चन।।3।।

दोहा – जिनकी महिमा कर करें, सुर नर मुनि गुणगान।
तिनकी अर्चा कर विशद, पाएँ शिव सोपान।।

(पुष्पांजलिं क्षिपते)

श्री पुष्पदंत विधान

स्थापना

दोहा – पुष्पदंत भगवान का, सुविधिनाथ भी नाम।
आह्वानन करते हृदय, करके चरण प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(रेखता छन्द)

क्षीर सम देते नीर चढ़ाय, रोग जन्मादिक मम नश जाय।
सुविधि जिन की अर्चा शुभकार, करे जो पाए भवदधि पार।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाने लाए गंध बनाय, भवातप पूर्ण नाश हो जाय।
सुविधि जिन की अर्चा शुभकार, करे जो पाए भवदधि पार।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल अक्षत से पूज रचाय, सुपद अक्षत हमको मिल जाय।
सुविधि जिन की अर्चा शुभकार, करे जो पाए भवदधि पार।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुरभित यह दिए चढ़ाय, काम रुज पूर्ण नाश हो जाए।
सुविधि जिन की अर्चा शुभकार, करे जो पाए भवदधि पार।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सुचरु के लाए थाल भराय, क्षुधा रुज मेरा भी नश जाय।
सुविधि जिन की अर्चा शुभकार, करे जो पाए भवदधि पार।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप यह घृत का लिया जलाय, मोहतम नाश पूर्ण हो जाय।
सुविधि जिन की अर्चा शुभकार, करे जो पाए भवदधि पार।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप यह लाए सुगन्धीवान, कर्म नश पाएँ शिव सोपान।
सुविधि जिन की अर्चा शुभकार, करे जो पाए भवदधि पार।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस फल चढ़ा रहे हम आज, मोक्ष पद का पाने साम्राज्य।
सुविधि जिन की अर्चा शुभकार, करे जो पाए भवदधि पार।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

विशद यह चढ़ा रहे हम अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।
सुविधि जिन की अर्चा शुभकार, करे जो पाए भवदधि पार।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- देते शांती धार, शांती पाने के लिए।
कर दो यह उपकार, हमको भी निज सम करो।।

(शान्तये शान्तिधारा)

सोरठा- हे त्रिभुवन पति ईश !, पुष्पांजलि करते चरण।
पाएँ यह आशीष, शिव पद के राही बने।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

फागुन वदि नौमि कहाए, प्रभु सुविधि गर्भ में आए।
हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा नवम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सुदि एकम पाए, सुर जन्म कल्याण मनाए।
हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सुदि एकम जानो, प्रभु दीक्षा धारे मानो।
हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक सुदि दोज बताई, प्रभु जी ने दीक्षा पाई।
हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादौं सुदि आठें स्वामी, प्रभु हुए मोक्ष पथगामी।
हम जिन महिमा को गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – सुविधि बताए मोक्ष की, पाए केवल ज्ञान।
जयमाला गाते यहाँ, करते हम यशगान।।

(चाल छन्द)

प्रभु प्राणत स्वर्ग से आए, काकन्दी धन्य बनाए।
तीर्थंकर पदवी धारी, इस जग में मंगलकारी।।1।।
जब गर्भ में प्रभु जी आए, सुर रत्न वृष्टि करवाए।
जन्मोत्सव इन्द्र मनाए, मेरू पे न्हवन कराए।।2।।
हैं मगर सुलक्षण धारी, तन श्वेत रंग मनहारी।
लख पूर्व दो आयू पाई, सौ धनुष रही ऊँचाई।।3।।
युवराज सुपद को पाए, कई वर्षों राज्य चलाए।
प्रभु उल्का पतन निहारे, संयम के भाव विचारे।।4।।
प्रभु शाल वृक्ष तल आए, दीक्षाधर ध्यान लगाए।
फिर घाती कर्म नशाए, प्रभु केवल ज्ञान जगाए।।5।।
सुर समवशरण बनवाए, वसु योजन का बतलाए।
गणधर अठासि बतलाए, गणि नायक प्रथम कहलाए।।6।।
प्रभु सुप्रभ कूट पे आए, सम्मेद शिखर कहलाए।
भादौं सुदि आठें जानो, शिव पदवी पाए मानो।।7।।

दोहा – मंगलमय मंगल कहे, आप त्रिलोकी नाथ।
अर्चा करते भाव से, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- नाथ ! आपकी भक्ति से, मिला हमें आधार।
'विशद' मोक्ष पद का मिले, हमको प्रभु उपहार।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

प्रथम वलयः

दोहा- चउ संज्ञाएँ जीव को, करें सतत् बेहाल।
किए नाश जिन पद नमन, मेरा विशद त्रिकाल।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

चतुः संज्ञा विनाशक जिन के अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

रत्नत्रय के धारी जिनवर, करते केवल ज्ञान प्रकाश।
आहार संज्ञा का विनाशकर, करते हैं शिवपुर में वास।।1।।

ॐ ह्रीं आहारसंज्ञा रहित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

निर्भय होके करें साधना, सप्त भयों का करें विनाश।
केवल ज्ञान प्रकट करके जिन, सिद्ध शिला पर करें निवास।।2।।

ॐ ह्रीं भयसंज्ञा रहित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कामबली पर विजय प्राप्त कर, मैथुन संज्ञा किए विनाश।
कर्म घातिया नाश किए जिन, पाए हैं शिव पद में वास।।3।।

ॐ ह्रीं मैथुन संज्ञा रहित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बाह्याभ्यंतर रहा परिग्रह, पूर्ण रूप से करके त्याग।
परिग्रह संज्ञा नाश किए प्रभु, चेतन गुण में धर अनुराग।।4।।

ॐ ह्रीं परिग्रह संज्ञा रहित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – चउ संज्ञाएँ नाशकर, हुए असंज्ञ जिनेश।
जिनकी अर्चा भाव से, करते यहाँ विशेष।।5।।

ॐ ह्रीं चतुः संज्ञा नाशक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वितिय वलयः

दोहा – अष्ट कर्म का नाश कर, पाए शिव सोपान।
गुण पाने जिन सिद्ध के, करते हम गुणगान।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अष्ट कर्म निवारक जिन के अर्घ्य

(पद्धरि छन्द)

प्रभु ज्ञानावरणी कर्मनाश, फिर करें ज्ञान केवल प्रकाश।
जिन पुष्पदन्त जग में महान, हम पूज रहे जिन पद प्रधान।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्म रहित अनंत ज्ञान युक्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन कर्म दर्शनावरण नाश, प्रभु करें दर्श क्षायिक प्रकाश।
जिन पुष्पदन्त जग में महान, हम पूज रहे जिन पद प्रधान।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरण कर्म रहित अनंत दर्शन युक्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब करें वेदनीय का विनाश, गुण अव्यावाध में करें वास।
जिन पुष्पदन्त जग में महान, हम पूज रहे जिन पद प्रधान।।3।।

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म रहित अव्यावाध गुण युक्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह कर्म से रहे हीन, जो सुखानन्त में रहें लीन।
जिन पुष्पदन्त जग में महान, हम पूज रहे जिन पद प्रधान।।4।।

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म रहित अनंत सुख युक्त श्री पुष्पदंत
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन आयु कर्म का कर विनाश, अवगाहन गुण में करें वास।
जिन पुष्पदन्त जग में महान, हम पूज रहे जिन पद प्रधान।।5।।

ॐ ह्रीं आयु कर्म रहित अवगाहनत्व गुण युक्त श्री पुष्पदंत
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु नाम कर्म करते विनाश, सूक्ष्मत्व सुगुण करते प्रकाश।
जिन पुष्पदन्त जग में महान, हम पूज रहे जिन पद प्रधान।।6।।

ॐ ह्रीं नाम कर्म रहित सूक्ष्मत्व गुण युक्त श्री पुष्पदंत
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ना गोत्र कर्म का रहा काम, गुण पाए अगुरु-लघु रहा नाम।
जिन पुष्पदन्त जग में महान, हम पूज रहे जिन पद प्रधान।।7।।

ॐ ह्रीं गोत्र कर्म रहित अगुरु-लघुत्व गुण युक्त श्री पुष्पदंत
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अन्तराय करके विनाश, जिन वीर्यानन्त में करें वास।
जिन पुष्पदन्त जग में महान, हम पूज रहे जिन पद प्रधान।।8।।

ॐ ह्रीं अन्तराय कर्म रहित अनंतवीर्य युक्त श्री पुष्पदंत
जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – अष्ट कर्म को नाशकर, पाए शिवपुर वास।
अर्चा करते हम यहाँ, होवे पूरी आस।।

ॐ ह्रीं अष्ट कर्म रहित अष्ट गुण युत श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतिय वलयः

दोहा – द्वादश तप धारी हुए, पुष्पदन्त भगवान।
कर्म निर्जरा कर विशद, पाएँ पद निर्वाण।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

द्वादश तप के अर्घ्य

(सखी छन्द)

जिनने अनशन तप धारा, वे त्याग करें आहारा।
हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं अनशन तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप ऊनोदर के धारी, होते हैं अल्पाहारी।
हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं ऊनोदर तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप व्रत संख्यान के धारी, संकल्प करें अनगारी।
हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं व्रत परिसंख्यान तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रस त्याग सुतप के धारी, जो छोड़ें हो अविकारी।
हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं रस परित्याग तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप विविक्त शैय्यासनधारी, हों अनाशक्त अनगारी।
हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं विविक्त शैय्यासन तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप कायोत्सर्ग के धारी, तजते ममत्व गुणधारी।
हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्ग तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप प्रायश्चित जो पाते, वे अपने दोष नशाते।
हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं प्रायश्चित तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिन विनय सुतप के धारी, इस जग में मंगलकारी।
हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं विनय तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप वैय्यावृत्ती धारें, वे संयम रत्न सम्हारें।
हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ति तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप स्वाध्याय के धारी, चिन्तन करते अनगारी।
हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।10।।

ॐ ह्रीं स्वाध्याय तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

व्युत्सर्ग सुतप जो पावें, वे तन से नेह घटावें।
हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।11।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हैं ध्यान सुतप के धारी, चिन्ता रोधी अविकारी।
हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।12।।

ॐ ह्रीं ध्यान तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

यह द्वादश तप जो पावें, वे अपने कर्म नशावें।
हम सुविधिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।13।।

ॐ ह्रीं द्वादश तप धारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जाप्य :- ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः मम सर्व कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा - दिव्य देशना दे प्रभू, जग को किए निहाल।
भाव सहित जिनकी यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

(वीर छन्द)

पुष्पदन्त जिनराज आज हम, द्वार आपके आये हैं।
पूजा सुविधि रचाकर हमने, तुमरे गुण प्रभु गाये हैं।।
तुम्हें छोड़ किसको देखे, किसको पाएँ इस जगती पर।
हो आप अलौकिक दुनियाँ में, प्रभु हृदय बसाएँ जगती पर।।

दर्श किया जिस पल हे भगवन् !, उस पल अति आनन्द मिला।
हृदय सरोवर में उस पल शुभ, भक्ती रस का सुमन खिला।।
पुष्पदन्त जिनराज आपका, जिन मन्दिर में वास रहा।
हृदय बनेगा मंदिर उसका, जो प्रभु पद का दास रहा।।
तुम हो सुख के सागर भगवन्, अक्षय सौख्य प्रदान करो।
भक्त आपके आस लगाएँ, अक्षय सुख का दान करो।।
अहो जिनालय ! अहो जिनेश्वर !, पावन श्रेष्ठ कहाते हैं।
अतः चित्त से प्रमुदित होकर, जिन महिमा को गाते हैं।।
चैत्यालय ही सिद्धालय का, पथ दर्शाने वाला है।
चिदानन्द चिन्मय शुभ चेतन, कृतकृत्य बनाने वाला है।।
पाप राशि भव-भव से संचित, क्षण में भस्म हुआ करती।
पुष्पदन्त जिनराज की भक्ती, भव-भव के दुख को हरती।।
जिनबिम्ब अचेतन होकर भी, जीवों को वांछित फल देते।
जो पूज रहे हैं भक्ती से, उनके सब संकट हर लेते।।
जय-जय जिनदेव अमंगल हर, जग में मंगल करने वाले।
जय 'विशद' ज्ञान के ईश आप, सब दोषों को हरने वाले।।

दोहा - पुष्पदंत भगवान हैं, जग के पालन हार।
हम को भी आशीष दो, जाएँ भव से पार।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने भव का कूल।
यही भावना है विशद, होवें सब अनुकूल।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

श्री पुष्पदंत चालीसा

दोहा - अर्हत् सिद्धागम धरम, आचार्योपाध्याय संत।
जिन मंदिर जिनबिम्ब को, नमन अनन्तानंत।।
कुन्द पुष्प सम रूप शुभ, पुष्पदन्त है नाम।
चरण-कमल द्वय में विशद, बारम्बार प्रणाम।।

चौपाई

जय-जय पुष्पदन्त जिन स्वामी, करुणानिधि हे अन्तर्यामी।।1।।
तुम हो सब देवों के देवा, इन्द्र करें तव पद की सेवा।।2।।
महिमा है इस जग से न्यारी, सारी जगती बनी पुजारी।।3।।
महिमा सारा जग ये गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।4।।
प्राणत स्वर्ग से चयकर आए, काकन्दी नगरी कहलाए।।5।।
पिता श्री सुग्रीव कहाए, माताश्री जयरामा पाए।।6।।
फाल्गुन कृष्ण नौमी कहलाए, मूल नक्षत्र गर्भ में आए।।7।।
प्रातः काल का समय बताए, इक्ष्वाकु कुल नन्दन गाए।।8।।
मगसिर शुक्ला एकम जानो, प्रभु ने जन्म लिया यह मानो।।9।।
मगर चिन्ह प्रभु का बतलाया, इन्द्रों ने पद शीश झुकाया।।10।।
धवल रंग प्रभु जी शुभ पाए, धनुष एक सौ ऊँचे गाए।।11।।
उल्कापात देख के स्वामी, बने आप मुक्ती पथगामी।।12।।
मगसिर कृष्णा एकम पाए, अनुराधा नक्षत्र कहाए।।13।।
अपरान्ह् काल दीक्षा का गाया, तृतिय भक्त प्रभु ने पाया।।14।।
दीक्षा वृक्ष पुष्प कहलाए, शाल वृक्ष तल ध्यान लगाए।।15।।

सहस्र भूप संग दीक्षा पाए, निज आतम का ध्यान लगाए।।16।।
कार्तिक शुक्ला तीज बखानी, हुए प्रभु जी केवलज्ञानी।।17।।
काकन्दी नगरी फिर आए, अक्षतरु वन पुष्प कहाए।।18।।
समवशरण वसु योजन पाए, सुन्दर आके देव रचाए।।19।।
एक महीने पूर्व से स्वामी, योग निरोध किए जगनामी।।20।।
यक्ष आपका ब्रह्म कहाए, काली श्रेष्ठ यक्षणी पाए।।21।।
गणधर आप अठासी पाए, उनमें नाग प्रथम कहलाए।।22।।
आयू लाख पूर्व दो पाए, चार वर्ष छद्मस्थ बिताए।।23।।
सर्व ऋषी दो लाख बताए, समवशरण में प्रभु के गाए।।24।।
घोषा प्रथम आर्यिका जानो, छियालिस गुण के धारी मानो।।25।।
गिरि सम्मेद शिखर पर आए, निज आतम का ध्यान लगाए।।26।।
सुप्रभ कूट रहा शुभकारी, हरा भरा जो है मनहारी।।27।।
भादौं शुक्ल अष्टमी जानो, एक हजार मुनि संग मानो।।28।।
मूल नक्षत्र प्रभु जी पाए, अपराह्न काल में मोक्ष सिधाए।।29।।
शुक्रारिष्ट ग्रह जिन्हें सताए, पुष्पदंत प्रभु को वह ध्याये।।30।।
पूजा और विधान रचाए, भावसहित चालीसा गाए।।31।।
करे आरती मंगलकारी, शुक्रवार के दिन मनहारी।।32।।
जीवन में सुख-शांति पावे, भक्त भाव से जो गुण गावे।।33।।
प्रभु की महिमा रही निराली, है सौभाग्य जगाने वाली।।34।।
महिमा सुनकर के हम आए, भाव सुमन अपने उर लाए।।35।।
कृपा करो तुम हे त्रिपुरारी, रोग शोक भय कष्ट निवारी।।36।।
मम जीवन हो मंगलकारी, विघ्न व्याधि नश जाए हमारी।।37।।

तव प्रतिमा के दर्शन पाएँ, हर्ष-हर्ष करके गुण गाएँ।।38।।
पद में सादर शीश झुकाएँ, अपने सारे कर्म नशाएँ।।39।।
भव सिन्धू से मुक्ति पाएँ, हम भी अब शिव पदवी पाएँ।।40।।

दोहा - चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख-शांती आनन्द पा, बने श्री के नाथ।।
विधि सहित पूजा करें, करके 'विशद' विधान।
पाते हैं सौभाग्य वह, अन्त में हो निर्वाण।।

प्रायश्चित पाठ

तर्ज - दिन रात मेरे.....

अपराध क्षम्म होवें, आशीष विशद पाएँ।
सब दोष दूर करने, जिन पद में सिर झुकाएँ।।1।।
तन से वचन से मन से, अपराध जो किए हैं।
कृत कारितानुमत से, दुख क्लेश जो दिए हैं।।2।।
चारों कषाय करके, स्वभाव को भुलाया।
आलस प्रमाद द्वारा, जीवों को बहु सताया।।3।।
भोजन शयन गमन में, कई पाप बन्ध कीन्हें।
अज्ञान भाव द्वारा, पर को जो कष्ट दीन्हें।।4।।
दिन रात हम से क्षण-क्षण अपराध हो रहे हैं।
कर्मों के बोझ से दब, पापों को ढो रहे हैं।।5।।
जिन देव गुरु शरण में, प्रायश्चित्त लेने आए।
मुक्ती श्री को पाके, भव रोग विनश जाएँ।।6।।

श्री पुष्पदंतनाथ स्तवन

(पुष्पांजलिं क्षिपते)

श्री पुष्पदंत विधान

स्थापना (वंशस्थ-छन्द)

वंदे मुदाश्रीश जिन पुष्पदंतं, शास्वत पदा नम्र सुखाभिनन्दनं।
तपस्फुरद्-वह्नि निमग्न मन्मथं, विनेय संदर्शित मुक्ति सत्पथम्।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(उपजाति-छन्द)

गंगादि तीर्थोद्भव नीर पूरै, शीतै सुगन्धै प्रयजे जिनेन्द्रं।
जिन पुष्पदंतं अर्हन् सुभक्त्या,नरेन्द्र देवार्चित पाद पद्मं।।1।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय जलं निर्व. स्वाहा।

श्री चंदनै नन्दित भृंग वृन्दैः, शीतै सुगन्धैर्-मलयादि जातैः।
जिन पुष्पदंतं अर्हन् सुभक्त्या, नरेन्द्र देवार्चित पाद पद्मं।।2।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय चंदनं निर्व. स्वाहा।

सन्मौक्तिकैर्-वा कमलाक्षताद्यै, शुभ्रै सुदीर्घै कमलादि वाह।
जिन पुष्पदंतं अर्हन् सुभक्त्या, नरेन्द्र देवार्चित पाद पद्मं।।3।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अक्षतं निर्व. स्वाहा।

जपा कुन्द मल्ली सुकदम्बजाती, सुचम्पकैः पद्म सुपारिजातैः।
जिन पुष्पदंतं अर्हन् सुभक्त्या, नरेन्द्र देवार्चित पाद पद्मं।।4।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सन्बावरै खज्जक शर्कराद्यै, सद्भाजनस्थै चरुभि मनोज्ञैः।
जिन पुष्पदंतं अर्हन् सुभक्त्या, नरेन्द्र देवार्चित पाद पद्मं।।5।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

कर्पूर घृतादि भवैः सुदीपैः, दीपैस्तमो नाश करैर्-वरिष्टैः।
जिन पुष्पदंतं अर्हन् सुभक्त्या, नरेन्द्र देवार्चित पाद पद्मं।।6।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूपैः सुगन्धैर्-गुरुद्-भवैर्-वा, संधूपिता सैर्-बहु लुब्ध भृंगैः।
जिन पुष्पदंतं अर्हन् सुभक्त्या, नरेन्द्र देवार्चित पाद पद्मं।।7।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय धूपं निर्व. स्वाहा।

लवंग ऐलाम्र सुदाड़िमौघैः, फलै सुनारिंग कपित्थ पूगैः।
जिन पुष्पदंतं अर्हन् सुभक्त्या, नरेन्द्र देवार्चित पाद पद्मं।।8।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय फलं निर्व. स्वाहा।

(बसंततिलका-छन्द)

सद्वारिगंध विशदाक्षत कुन्द पुष्पैः, नैवेद्य कैवेरं सुदीप सुधूप पूगैः।
नारायणो यजसि देव नरेन्द्र पूज्य, श्री पुष्पदंतं जिनपं वरपात्र सस्थै।।9।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

नवम्यां फाल्गुने कृष्णे, गर्भे प्रभु-रवातरत्।
काकन्दी पितु सुग्रीव, जयराभा मातुस्तथा।।1।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्ण नवम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म प्राप्ते मार्ग शीर्षे, शुक्लपक्षे प्रतिपदा।
देवेन्द्र पूजिता पादौ, प्रजातो भव्य भास्करः।।2।।

ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व लक्ष द्वयात्मायु, शत चाप समुच्छ्रितिः।
प्रतिपदा मार्गे शुक्ले, दीक्षां दैगम्बरीं श्रितः।।3।।

ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितायां कार्तिके शुक्ले, कैवल्यं प्राप्तवान प्रभु।
दिव्य ध्वनि प्रदातारं, भव्य कल्याण हेतवे।।4।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याण प्राप्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्विनेऽसिते अष्टम्यां, मोक्ष लक्ष्मी समागमत्।
विशदाष्ट गुणे प्राप्तं, परमानन्द सौख्यभृत्।।5।।

ॐ ह्रीं भादों शुक्लाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

द्वय-लक्ष पूर्वायु च, देहोत्सेध दण्ड शत।
जयरामाऽत्मजो-सौभां, पायात् मकर लांछनं।।1।।

(इन्द्रवज्रा-छन्द)

धत्ते तदाऽनिर्वचनीय रूपं, मानन्द कन्दं सुरदुर्लभं यत्।
घातीय कर्माणि विदाह्य तेषां, कैवल्यज्ञानं समुदेति शुद्धम्।।2।।

अर्हन्त एते ह्युपदिश्य धर्मा-नन्तेत्व घातीयक कर्म दग्धा।
प्राक्-चाष्टमे हीषदुभार भूषणे, सिद्धं शिलापीठ मधिश्रयन्ति।।3।।
अष्टौ तदा कर्मततिं प्रणाश्य, सम्यक्त्व-काद्यष्ट गुणान् भजन्ति।
संसार क्षारोदधि-मुत्तरन्तो, मुक्तास्तु ते पार-मुपाश्रयन्ति।।4।।
पुष्यंति भव्यास्तव नाममंत्रैः, तुष्यंति नित्यं गुणकीर्तनेन।
पुष्यान्मनो मे जिनपुष्पदंतः, त्वां भक्ति पुष्पांजलि-नार्चयामि।।5।।

(बसन्तलिका-छन्द)

त्रैंलोक्य मंगलकराय नमोस्तु तुभ्यं,
पुष्पावदात सुगुणाय नमोस्तु तुभ्यम्।
श्री पुष्पदंत जिनपाय नमोस्तु तुभ्यं,
विद्यावते सुविधये च नमोस्तु तुभ्यम्।।6।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्पूयामि जिनेन्द्राय, ध्यायन्ति स्तवन्तिस्-तथा।
विशद गुणावलिं कुर्यात्, त्रियोगेन् पुनः पुनः।।8।।

।। इत्याशीर्वादः।।

प्रथम वलयः

नमस्ते पुष्पदंताय, कर्म शत्रु जयायते।
ध्वस्त कुमति देवाय, निक्षेप-नामादि युते।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

चतुः संज्ञा

आहार संज्ञा जीवानां, आहारेच्छा कुर्यात् सदा।
क्षुधा दोष रहितोऽर्हत्, पूजनीयाः पुनः पुनः।।1।।

ॐ ह्रीं आहार संज्ञा रहिताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

भय संज्ञा भयं कृत्त्वा, जीवानां मानसे तथा।
भय संज्ञा रहितोऽर्हत्, पूजनीयाः पुनः पुनः।।2।।

ॐ ह्रीं भय संज्ञा रहिताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

मैथुन संज्ञा जीवानां, मिथः कुर्यात् सर्वदा।
मैथुन संज्ञा त्यक्त्वा, पूजनीयाऽर्हतस्तथा।।3।।

ॐ ह्रीं मैथुन संज्ञा रहिताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

परिग्रह संज्ञा युक्तो, मूर्छाभाव युतो नरः।
सर्व संग निर्मुक्तो यो, पूजनीयाऽर्हज्जिनः।।4।।

ॐ ह्रीं परिग्रह संज्ञा रहिताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

तत्त्वार्थाः सन्त्यमी नाम, स्थापना द्रव्यभावतः।
न्यस्य मानतया-देशात्, प्रत्येक स्युश्-चतुर्विधाः।।5।।

ॐ ह्रीं चतुः संज्ञा रहिताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

द्वितीय वलयः

सर्व गुणाधिपं सारं, सर्व सौख्य करं सताम्।
अष्टकर्म क्षयं कुर्यात्, विशदं शास्वति श्रियं।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

कर्म रहित जिन

प्राप्तये च ज्ञानानन्तं, ज्ञानावरण क्षयात् सः।
स्थिते सिद्ध शिला पीठे, पूजयेत् सर्व सिद्धये।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरण कर्म रहित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

क्षयं दर्शनावरणं, क्षायक दर्शनं जगुः।
स्थिते सिद्ध शिला पीठे, पूजयेत् सर्व सिद्धये।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरण कर्म रहित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

वेदनीय क्षयात् कर्म, अव्याबाधं गुणं युतः।
स्थिते सिद्ध शिला पीठे, पूजयेत् सर्व सिद्धये।।3।।

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म रहित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

क्षयात् मोहनीय कर्मं, सुखानंत अवाप्तये।
स्थिते सिद्ध शिला पीठे, पूजयेत् सर्व सिद्धये।।4।।

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म रहित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

आयु कर्म विनाशितवाद्, अवगाहन गुणान्वित्।
स्थिते सिद्ध शिला पीठे, पूजयेत् सर्व सिद्धये।।5।।

ॐ ह्रीं आयु कर्म रहित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

नामकर्म क्षयं कृत्वा, सूक्ष्मत्व गुणाप्तयेन् च।
स्थिते सिद्ध शिला पीठे, पूजयेत् सर्व सिद्धये।।6।।

ॐ ह्रीं नाम कर्म रहित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

गुणा गुरुऽलघु प्राप्तं, गोत्र कर्म विनिशिना।
स्थिते सिद्ध शिला पीठे, पूजयेत् सर्व सिद्धये।।7।।

ॐ ह्रीं गोत्र संज्ञा रहिताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

अन्तराय विनाशित्वाद, प्राप्तेऽनन्त बलं च।।
स्थिते सिद्ध शिला पीठे, पूजयेत् सर्व सिद्धये।।8।।

ॐ ह्रीं अन्तराय संज्ञा रहिताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

विशदाष्ट गुणोपेतं, पूज्ये सिद्ध पदाप्तये।
यजेऽहय तु नीराद्यै, सिद्ध पदान् च प्राप्तये।।9।।

ॐ ह्रीं अष्ट संज्ञा रहिताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

तृतीय वलयः

महाव्रत धरोधीरा, रत्नत्रयस्य धारकः।
नमस्तुभ्यम् पाद युग्मे, प्रभू पुष्पदंत्यो नमः।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

भावना चतुष्टयं + द्वादश तप

समगुणे समायुस्ये, यत् भवन्ति मित्रता।
समायत सर्वे जीवाः, तेन सर्वे मित्रं भवेत्।।1।।

ॐ ह्रीं मैत्री भावना सहिताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

सद्गुणा पूज्या भवति, गुणो भवति आदरः।
गुणिषु यत् आदरं भावं, प्राप्ते प्रमोदम गुणः।।2।।

ॐ ह्रीं प्रमोद भावना सहिताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

सुखेच्छन्ति सर्वे जीवः, दुखे भवति कातरः।
पर दुःख विनाशार्थं, कर्त्तव्यं च दया सदा।।3।।

ॐ ह्रीं कारुणय भावना सहिताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु कर्म बहुज्जीवाः, तेन भावे विचित्रताम्।
विविधेन समं भावं, सर्व श्रेष्ठं माध्यस्थताः।।4।।

ॐ ह्रीं माध्यस्थ भावना सहिताय श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(उपजाति-छन्द)

शुद्धासन-त्याग-तपोभि-युक्तान्।
क्षुधादि-दुःखोर्म्मिसहान् समर्थान्।।
जिनेन्द्रमुख्यान्प्रयजे समस्तान्।
सुपक्षलक्षान्वर-शास्त्र-दक्षान्।।5।।

ॐ ह्रीं अनशनतप सहित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

वरावमौदर्य्य-सुवीर्य-वय्र्यान्।
अहार्यक्षद्दुः खसहे समर्थान्।।
जिनेन्द्रमुख्यान्प्रयजे समस्तान्।
सुपक्षलक्षान्वर-शास्त्र-दक्षान्।।6।।

ॐ ह्रीं अवमौदार्य तप सहित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वाहा।

सुवत्तिसंख्याननितांतनेतृन्।
संख्यावतोऽसंख्य-सुशिष्यलक्षान्।।

जिनेन्द्रमुख्यान्प्रयजे समस्तान्।
सुपक्षलक्षान्वर-शास्त्र-दक्षान्।।7।।

ॐ ह्रीं वृत्तिपरिसंख्यान तप सहित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आज्यादि-नाना-रसमुक्तियुक्तान्।
क्रमाक्रमाभ्यां वरविक्रमांकान्।।
जिनेन्द्रमुख्यान्प्रयजे समस्तान्।
सुपक्षलक्षान्वर-शास्त्र-दक्षान्।।8।।

ॐ ह्रीं रसपरित्याग तप सहित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विविक्तशय्यासन-शुद्धि-शुद्धान्।
विशुद्ध-चिद्रूपसमृद्धि-युक्तान्।।
जिनेन्द्रमुख्यान्प्रयजे समस्तान्।
सुपक्षलक्षान्वर-शास्त्र-दक्षान्।।9।।

ॐ ह्रीं विविक्त शयनासन तप सहित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतातपाद्यैः कृतकाय-पीडान्।
संपीडनानेन्द्रिय-कर्म्म-शत्रून्।।
जिनेन्द्रमुख्यान्प्रयजे समस्तान्।
सुपक्षलक्षान्वर-शास्त्र-दक्षान्।।10।।

ॐ ह्रीं कायक्लेश तप सहित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आभ्यंतरं पूर्वमनंत-शक्त्या।
तपः प्रभेदं चरतः प्रशस्तान्।।
जिनेन्द्रमुख्यान्प्रयजे समस्तान्।
सुपक्षलक्षान्वर-शास्त्र-दक्षान्।।11।।

ॐ ह्रीं शक्त्या तप सहित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्विधां संदधतो विनीर्तिं।
विनेयवारैर्नतपादपप्रान्।।
जिनेन्द्रमुख्यान्प्रयजे समस्तान्।
सुपक्षलक्षान्वर-शास्त्र-दक्षान्।।12।।

ॐ ह्रीं विनय तप सहित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दश प्रकारां परम-प्रणीतां।
स्वीकुर्व्वतो व्यावृत्तिमुत्तमार्थां।।
जिनेन्द्रमुख्यान्प्रयजे समस्तान्।
सुपक्षलक्षान्वर-शास्त्र-दक्षान्।।13।।

ॐ ह्रीं व्यावृत्तिमुत्तमार्थां तप सहित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुः प्रकाराद्भुत-शास्त्रतनिष्ठान्।
स्वाध्याय-संधा-सुविशुद्धि-युक्तान्।।
जिनेन्द्रमुख्यान्प्रयजे समस्तान्।
सुपक्षलक्षान्वर-शास्त्र-दक्षान्।।14।।

ॐ ह्रीं स्वाध्याय तप सहित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वस्वाहा।

ममत्व-मुक्तानमरेन्द्रमान्यान्।
व्युत्सर्ग्गिणः संसृति-भाव-भीतान्।।
जिनेन्द्रमुख्यान्प्रयजे समस्तान्।
सुपक्षलक्षान्वर-शास्त्र-दक्षान्।।15।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तप सहित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व स्वाहा।

पराष्ठ-सद्धयानसमृद्धिभाजः।
सद्धर्म्म-शौक्ल्यामृत-पान-तुष्टान्।।
जिनेन्द्रमुख्यान्प्रयजे समस्तान्।
सुपक्षलक्षान्वर-शास्त्र-दक्षान्।।16।।

ॐ ह्रीं सद्धर्म्म तप सहित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भावना संयुक्तो एवं, सम्यक् तप युतो जिनः।
श्री पुष्पदंत देवाय, पूजनीया पुनःपुनः।।17।।

ॐ ह्रीं चतुः संज्ञा रहित द्वादशतप सहित श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

पुष्पदन्त जिनेन्द्राय , पुष्प सरच्छिदे नमः।
तुष्टि पुष्टि प्रदातस्ते, स्वात्म पुष्टयै नमो नमः।।1।।

जिनपते ! दुरितंजय ! सौम्यभृत् !,
स्मरजयिन् ! करुणाहृद ! कर्मभित्।

त्रिभुवनाध्पि ! मे हृदि तिष्ठ भोः !,
अव भवाद् भवि-कैरवचंद्रमः ! ।।2।।
धनदयक्षकृते सदसि स्थितः,
उडुयुतः शशिवज्जिनचंद्रमाः।
द्विदशसभ्यगणैः प्रविराजते,
दिशति सार्ववृषं शिवकारिणं।।3।।
जिनरवे ! जिनचंद्र ! जिनेन्द्र ! हे !
कुरु कृपां शरणागतवत्सल !
भवत उद्धर हे जिनपुंगव !
भवमहोदधितारक ! पाहि मां।।4।।
सुरकृपा सुमवृष्टिरिति त्वयि,
उडुगणश्च पतन् किमु भाति खात्।
तव पदाम्बुजभक्तिसुमानावलिः,
शिवसुखाय मयापि समर्प्यते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्दपुष्पशुभ्रदेवैवत्तया प्रसिद्धिता।
आगमप्रमाणयुक्तियुक्तधार्म्यतथ्यवाक्।।
पुष्पदन्तइत्यभूत्समस्तदेव देवराट्।
यः समेस्तु बुद्धये समृद्धयये जिनेश्वरः।।6।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।